डिजिटल दैनिक साहित्य 24

www.sahitya24.com

राष्ट्रीय संस्करण

साहित्य कला और संस्कृति को समर्पित एक डिजिटल अभियान

वर्ष-05, अंक-06 | पृष्ठ-4 | डिजिटल अंक-06 | शुक्रवार, 14 अगस्त, 2026 | संपादक हरिप्रकाश पाण्डेय | मूल्य 0, नि:शुल्क

BHAGAT HOSPITAL Works Wonders

BHAGAT HOSPITALS PVT. LTD.

BHAGAT HOSPITALS
2/48-49, Janak Puri, New Delhi-110058
Tel. No.:011-45102030

BHAGAT CHANDRA HOSPITALS
RZF-1/1, Mahavir Enclave, Near Palam-Dwarka Flyover, New Delhi-110045
Tel. No.:011-45254523/24/25

E-mail : info@bhagathospital.com, website : bhagathospital.com *NABH accreditation for both the hospitals

Delhi's Premier Family Health Care Facility with Professionally Managed Medical Staff Contact No. 9811279079

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE NABH ACCREDITED

A NABH Accredited Hospital

वे किसान (कविता)

किसानों की बस्ती है
ईमानदारी का
मेहनत का
किसी का हिस्सा नहीं खाते हैं
मेहनत करके
उगाते फसल हैं
लहलहाती फसलों को देखकर
खुश होते हैं वे किसान
जब खेतों में जाते हैं
सिर्फ अपनी भूख
नही नजर आती है
बल्कि उन शहरों में
जो रहते हैं लोग
उनकी भूख मिटाने के लिए
अपना तन जलाते हैं
अपनी उम्मीद बेचकर
वे किसान
किसी की उम्मीद बनाते हैं
अपनी टूटी तकदीर से
दुनिया का पेट भरते हैं
वे सच्चे किसान
टूटी बस्ती में रहते हैं

जयचन्द प्रजापति 'जय'
प्रयागराज

मानसिक मंदिर आश्रय गृह गोरखपुर में छात्रों के बीच वितरित किया गया राष्ट्रीय ध्वज एवं खाद्य पदार्थ

मंदबुद्धि विद्यालय के बच्चों से बातें करना उनसे मिलना ईश्वर की इबादत की तरह है-मिन्नत गोरखपुरी

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार गोरखपुर लिटरेरी सोसायटी एवं धरोहर मंजरी के संयुक्त तत्वाधान में गौतम गोरखपुरी व परी श्रीवास्तव के संयोजन में सरदार जसपाल सिंह एवं हसन जमाल उर्फ बबुआ भाई, एडवोकेट पूजा गुप्ता के नेतृत्व में मानसिक मंदिर आश्रय गृह गोरखपुर में छात्रों के बीच राष्ट्रीय ध्वज वितरित किया गया साथ ही साथ खाद्य पदार्थ भी बांटा गया। कार्यक्रम के आयोजन मिन्नत गोरखपुरी ने बताया की लगातार आज चौथा दिन है जब हम लोग आजादी का जश्न मना रहे हैं उसी कड़ी में मंदबुद्धि विद्यालय के बच्चों से मिलना उनसे बातचीत करना ईश्वर की इबादत करने जैसा है।

इस अवसर पर परी श्रीवास्तव मारिया मिन्नत, रविकांत पांडेय, हसरत,शब्बीर, शालिनी सोनी, नोमान अंसारी, इजहार सहित बहुत सारे लोग उपस्थित रहे है।

स्वार्थ

जब-जब निज स्वार्थ हुआ हावी,
दुख ने घर ताला खोल दिया।
अच्छे -अच्छे घर टूट गए,
जिसने इसको मन मोल लिया।।१
लालच जब हावी होता है,
उस दम विवेक मर जाता है।
जो कभी न टूटने बाले थे,
उन रिश्तों में बिष घोल दिया।।२
था तिलक भाल जितना लम्बा,
मन भी उतने ही काले थे।
झूठी बातों जग भरमाया,
अंदर से कलेजा छोल दिया।।३
पाला जिनको कोयल की भाँति,
जब देखा वही गिद्ध निकले।
उन गिद्धों ने बूढ़े तन को,
रद्दी के भाव में तौल दिया।।४
बदला जिस रोज कर्म लेगा,
बिन पंख पखेरू गति होगी।
तिल-तिल टूटेगा तन हर दिन,
सोचोगे 'विजय 'क्या बोल दिया।।५

पण्डित विजय भारद्वाज

भागते भूत की लँगोटी

ब्रिटिश लंदन, लेके भाग गए थे।
गजनी गौरी, अपने देश ले भागे।
आप लूटकर, किधर ले जाएँगे।
न गंगा बुलाए,न जमना बुलाती।
स्वार्थ की गंगा, अविरल बहती।
लंपट से दोस्ती,अमीर का वंदन।
नही सुनाई देता, है आज क्रंदन।
करते वे मार्केटिंग से इतर नही।
काफी था बिकने को, देश नही।
सब्जबाग जो दिखाए थे आपने।
पता ढूंढने सब सड़को पर आए।
आजादी के बीच दस्तक देता है।
कौनसी आजादी का आगाज है।
भागते भूत की लँगोटी लूटने को।
जेनजी आज ताल ठोक चला है।
कांवड़ होती है, मुश्किल ककळ से।
रोजगार समस्या, कभी है नही।
बिन पढ़े भिखारी, बैठे सता में।
बाबा होते गए, अमीर व्यापारी।
मुगल लूट से, शीशमहल बने थे।

सुरेश गुप्ता

स्वतंत्रता दिवस

मिट्टी की सौंधी खुशबू में, उनकी याद समाई है,
भारत मां के चरणों में, हर सांस मैंने चढ़ाई है।
आओ ऐसा भारत गढ़ें, जहां न कोई बेबस हो,
आजादी का अर्थ तभी, जब हर चेहरा निर्भय हो।

रक्षाबंधन – जीवन दर्शन

राखी केवल धागा नहीं, रिश्तों का विश्वास है,
बहन की आंखों में भाई के लिए, दुआओं का आकाश है।
रक्षा केवल भाई करे–इतना ही क्यों संसार कहे,
हर मानव मानव की रक्षा करे, प्रेम जहां आधार रहे।
टूटे मन को बांध सके जो, वही सच्चा बंधन है,
स्नेह, समानता, मानवता–यही रक्षाबंधन है।

अनीता "अंतर्मन"

शहीदों के लहू से सजा, ये तिरंगा प्यारा है,
हर हिंदुस्तानी के दिल में, इसका उजियारा है।
जिन वीरों ने हंसकर अपना जीवन देश पे वार दिया,
उनके बलिदानों ने हमको, आजादी का उपहार दिया।

जब प्रयागराज का संगम, वृंदावन में कान्हा के रंग में रंगा.

.. प्रेम और मित्रता के इन आत्मीय क्षणों में जब यादों ने पीछे मुड़कर निहारा तो हम सब लगभग तीस-पैंतीस वर्ष पीछे पहुंच गए..लगा मानों वक्त वहीं ठहर सा गया!

राधा कृष्ण की लीलास्थली वृंदावन में हम मित्रों का पुनर्मिलन मात्र संयोग नहीं बल्कि मित्रों के मित्र श्री कृष्ण की अदृश्य कृपा का साक्षात प्रतिफल है।

कहाँ इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कला संकाय के वो विशाल परिसर और कहाँ वृंदावन की कुंज गलियां! लेकिन जब 1992 बैच के हम दोस्त मिले, तो प्रयागराज की यमुना का प्रवाह सीधे वृंदावन के घाटों से जा मिला। अवसर था 1992 बैच के दर्शन शास्त्र विभाग के पोस्ट ग्रेजुएशन के मित्रों के रीयूनियन का। मित्र अरुण उपाध्याय जी के अत्यंत स्नेहिल व आत्मीय आतिथ्य एवं संयोजन में वृंदावन धाम में अभूतपूर्व आयोजन संपन्न हुआ साथ ही राम सुरेश जी और रमेश जी भी आयोजन के सह संयोजक रहे। 8, 9 और 10 अगस्त 2026 को होटल रॉयल भारती में सभी मित्रों व उनके परिवार जनों का तीन दिवसीय सानंद प्रवास रहा, होटल के प्रवेश द्वार पर ही हम सबका ढोल नगाड़ों से भव्य स्वागत किया गया। इन व्यवस्थाओं के पीछे इन तीन मित्रों की शक्ति इनकी जीवनसंगिनी विवेका जी, उर्मिला जी और अनामिका जी का प्रेम से पगा ऐसा सहज सहयोग निःशब्द कर गया।

हालांकि ये रीयूनियन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग 1992 बैच के छात्रों की थी, इस आयोजन में मैं और मेरे मित्र विकास मिश्रा हम दोनों इसी बैच के संस्कृत के सहपाठी, 'संस्कृत विभाग' के छात्र रहे थे तकनीकी रूप से हम वहां 'अतिथि' थे परंतु मित्र अरुण उपाध्याय और प्रिय सखी मनु लक्ष्मी मिश्रा के स्नेह आमंत्रण पर हम सपरिवार वहां उपस्थित हुए और संपूर्ण दर्शन शास्त्र विभाग ने जिस आत्मीयता से हमारा स्वागत किया कि सारी औपचारिकताएं एक क्षण में समाप्त हो गईं, भला ज्ञान और रिश्तों के उस सांझे अतीत को विभागों की सरहदें बांध भी कैसे सकती थीं...! इसका एक कारण और भी था कि हमारी इस मित्रता की जड़ें बी.ए. के दिनों से भी जुड़ी थीं तब हममें से कई लोग एक ही क्लासरूम में बैठते थे क्योंकि मैंने बीए तक दर्शनशास्त्र पढ़ा था, और दर्शनशास्त्र के कई मित्रों ने बी.ए. में संस्कृत। बी.ए. के बाद एम.ए. में हमारी राहें जरूर जुदा हुई! हम संस्कृत विभाग चले गए और वो दर्शनशास्त्र विभाग। लेकिन इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के निमार्ताओं ने भी हमारे दिलों का ख्याल रखते हुए दोनों विभागों को बिल्कुल 'आमने-सामने' बनाया था। लगभग तीन-चार दशकों के समय के इस अंतराल को पार करके जब विस्मृत सी स्मृतियां हृदय पटल पर स्पंदित हुईं तो मानो जीवन के दर्पण में हम पुनः वही बाइस तेईस वर्ष के सद्यः युवा बन गए। जहां मनु लक्ष्मी मिश्रा और रंजना दीक्षित तो मेरी बचपन की सखियां हैं वहीं नीलू अग्रवाल, माया त्रिपाठी, मुदिता मिश्रा, अनीता, प्रियंका सिंह और पूनम ओझा से इतने लंबे समय के बाद आत्मीय मुलाकात हुई.... कुछ और मित्रों को चेहरों से पहचाना कुछ को नाम से जाना और कुछ अनजाने सहपाठियों को जानने का मौका इस आयोजन में मिला। पहली बार यहां मित्र विकास मिश्रा की जीवनसंगिनी शस्या भाभी से मुलाकात हुई, इतनी सहज इतनी प्यारी शख्सियत हैं कि क्या कहने, एक ही भेंट में ऐसी आत्मीयता हो गई कि फिर दोनों दिन, हम साथ-साथ घूमे और साथ-साथ रहे।

तीन दशकों के इस लंबे सफर में वक्त बहुत बदल गया। हमारे इसी बैच के कई सहपाठी आज देश के शीर्ष प्रशासनिक पदों और कढर

जैसे गौरवशाली पदों पर आसीन हैं। हमारे इन प्रशासनिक मित्र-आयोजकों ने अपनी व्यस्तताओं के बीच हमारे लिए इतनी श्रेष्ठ और अभूतपूर्व व्यवस्था की, जो जीवन पर्यन्त हृदय में अंकित रहेगी। सावन के पावन महीने में कामदा एकादशी के दिन ठाकुर जी की ऐसी असीम कृपा हुई कि श्री बांके बिहारी जी के दरबार में हमें ठीक विग्रह के सम्मुख जाकर, बिना किसी कतार के, साक्षात और परम पावन दर्शन का सौभाग्य आप आयोजक मित्रों के कारण ही मिला। ठाकुर जी की उस नयनाभिराम छवि को इतने पास से निहारना एक ऐसा आलौकिक अनुभव था, जिसने सबको भावविभोर कर दिया। वृंदावन में तीन दिनों के प्रवास में प्रेम मंदिर तथा चंद्रोदय मंदिर की भव्यता के बीच घूमते हुए, हम सबने ढेरों तस्वीरें खिंचवाईं। जहां प्रेम मंदिर में दर्शन के बाद हम सबने वही प्रांगण में बैठकर लाइट शो देखा वहीं सावन के इस झूले के मौसम में चंद्रोदय मंदिर में (जो अभी पूरा नहीं बना है बल्कि निमार्णाधीन है)

हम सहेलियों ने वहाँ लगे झूले पर बैठ कर खूब तस्वीरें खिंचवाई और वहां के अन्नकूट रेस्टोरेंट में भगवान का महाप्रसाद अत्यंत स्वादिष्ट भोजन ग्रहण किया ।

मेरी परम इच्छा थी कि हम लोग गोशाला जाएं इसलिए मनु के साथ नीलू, उसकी प्यारी बिटिया बुलबुल और मैं, हम सब श्री पाद गौशाला गए जहां छः हजार से अधिक गौ माता हैं जिनकी आधुनिक संसाधनों की मदद से सेवा की जाती है। फिर हमने लोई बाजार से ब्रज का प्रसिद्ध परिधान गोपी वस्त्र खरीदा।

वृंदावन की इस यात्रा में श्रीजी और कान्हा के दिव्य दर्शन से जहां मन आध्यात्मिकता से परिपूर्ण था वहीं मित्रमंडली ने सायंकाल रंगारंग कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया जहां रास लीला मंडली के कलाकारों ने श्री कृष्ण के गीतों पर थिरकने को बाध्य कर दिया.. वहीं एक नृत्य नाटिका की सुंदर प्रस्तुति में कृष्ण जी, मैया यशोदा से विवाह करने की ज़िद करते हैं और यशोदा मैया उनको विवाह की सहमति नहीं देती हैं.. इस गीत में हमारी प्रिय सखी मनु लक्ष्मी मिश्रा ने यशोदा मैया के चरित्र को ऐसा जिया, ऐसा दृश्य प्रस्तुत किया की वहां उपस्थित सभी लोग भाव विभोर हो गए। मनु ने श्री कृष्ण पर तथा दोस्ती पर अपनी प्रभावशाली रचनाएं भी सुनाईं। इसके बाद अनेक मित्रों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां दीं..प्रिय सखी, कोकिल कंठी रंजना दीक्षित ने अपने मधुर स्वरों में गजल गाकर महफिल मे समां बांध दिया... वहीं राघवेन्द्र ने युगल स्वर में (स्त्री पुरुष दोनों की आवाज में) गीत गा कर सबको अचंभित कर दिया। किस-किस की तारीफ करूं राकेश जी की हृदय को छू लेने वाली गजलें व कर्णवध की कविता, राम सुरेश जी की जीवन से भरपूर रचना, गोरखनाथ जी का दर्शन से ओतप्रोत प्रेम को व्याख्यायित करता वक्तव्य जिसके चक्कर में वे अपने ही सुपुत्र के प्रश्नों पर रन आउट होते होते बचे बेटे ने पूछा कि - 'पापा क्लास में आपकी फेवरेट कौन थीं!' प्रश्न सुनकर निरुत्तर हो बातों को घुमाने का असहाय प्रयास करते दिखे भट्ट जी जिसे बड़ी परिपक्वता से शानदार संचालन कर रहे अरुण उपाध्याय जी के द्वारा संभाल लिया गया।

गोरखनाथ जी का बहुत ही समझदार और प्यारा बेटा जो कि 'स्पेशल चाइल्ड' है उसने कहा कि वैसे तो मेरे जैसे बच्चे अनाथालय में पाए जाते हैं लेकिन मेरे माता-पिता ने मुझे सब कुछ दिया है जिसके लिए मैं अपने माता-पिता का धन्यवाद करता हूं" यह सुनकर सभी की आंखें नम हो गईं।

12-13 साल के दो बच्चे जो वत्स बंधु के नाम से प्रसिद्ध है उन्होंने अनूप जलोटा जी का बहुत ही सुंदर भजन 'ऐसी लागी लगन' प्रस्तुत कर संपूर्ण वातावरण को भक्तिमय कर दिया।

सबने बहुत ही अच्छी प्रस्तुति दी पर विशेष रूप से कमलाकांत जी ने तो महफिल ही लूट ली भोजपुरी गीत- "कुइयां का ठंडा पानी पीपल की छांव रे, अइहा परदेसिया सवेरे मोरे गांव रे।" पर जब उन्होंने तान छेड़ी और पोडियम पर तबला बजाकर साथ दिया अरुण उपाध्याय जी ने तो वहां बैठे सभी लोग वाह-वाह कर उठे। इसके बाद लोगों के आग्रह पर उन्होंने और भी गीत सुनाए।

हमारे आयोजक मित्र विशेष रूप से अरुण उपाध्याय, राम सुरेश जी, रमेश जी और ठाकुर जी को इस अविस्मरणीय और आलौकिक आयोजन के लिए अनंत धन्यवाद। विश्वविद्यालय के इस रीयूनियन में मुझे आमंत्रित करने के लिए आप सबका हृदय से धन्यवाद! इतने सुंदर, सुव्यवस्थित व श्रेष्ठ आयोजन के लिए आप सबकी मेहनत स्पष्ट दिख रही थी। इतनी सकारात्मक ऊर्जा के साथ आपने जिस प्रकार सौ से अधिक लोगों को पवित्र वृंदावन धाम का सुखद भ्रमण ही नहीं बल्कि बांके बिहारी जी का इतना भव्य दर्शन करवाया उसके लिए आप सबको हृदय से नमन

हालांकि बहुत से आयोजनों में मैं नित्य प्रति सम्मिलित होती रहती हूं, मैं भी सतत आयोजन करती रहती हूं परंतु पहली बार इस तरह के मित्रवत आयोजन मैं सम्मिलित हुई जहां हमारे सभी सहपाठी शामिल थे और इस कार्यक्रम की सबसे विलक्षण बात यही थी कि सभी के जीवनसाथी भी पूर्णरुप से इस आयोजन का सहयोग भी कर रहे थे और आनंद भी ले रहे थे।

यादों की ये दिव्य धरोहर सदा के लिए हृदय को स्पंदित करती रहेगी! अद्भुत, अद्वितीय, प्रेम और आत्मीयता से परिपूर्ण इस अविस्मरणीय आयोजन की खुमारी कभी नहीं उतरेगी! सचमुच सभी मित्रों का प्रेम, स्नेह, हंसी ठिठोली दिल में बस गई! ऐसा लग रहा मानो मन का कुछ हिस्सा वहीं छूट गया।

अति सिद्धांतिकता के बजाय जमीनी सहकार का गाँव जागरूकता की दिशा में...

कल ऐसे विषयों पर मातृशक्ति ने खुलकर चर्चा की जिन पर वे अपने परिवार से भी संवाद करने में अति संकोच करती हैं यही इस संकल्प की सार्थकता है..कि वह बात वे खुलकर यहाँ रख सकी।

ग्राम पालिया का अनूठा अनुभव..

स्थल :बी. डी तोषनीवाल विद्यालय का प्रांगण, ग्राम पालिया

सुनियोजित कुशल प्रबंधन -विद्यालय परिवार

यहाँ सत्संग और केवल कावड़ यात्रा की सामूहिकता ही नहीं,

पर्व-त्योहारों से लेकर मांगलिक कार्यक्रमों की सामूहिकता के साथ जागरूक होने की सामूहिक आस्था भी यहाँ एक ०?यापक परिघटना है..

हमने गाँव में केवल अभावों को देखा उनके भाव को नहीं..

मेरे लिए हर बार ग्राम पालिया जाना एक अलग मनोभूमि को स्पर्श करने जैसा अनुभव है जहाँ मैंने स्वयं को निपट कोरा ही रख रखा था।

शहर की आपाधापी और तेज रफ़्तार जीवन-शैली के उलट एक मंथर लय में बहता यह गाँव पालिया जहाँ पहुंचना मुझे समाजशास?त्र एवं मानव-शास्त्र के गुर सीखाता है।

ऐसा ही कुछ कल भी सीखा जब श्री माधव सेवा न्यास के मातृशक्ति स्वास्थ्य जागरूकता प्रकल्प के अंतर्गत पालिया गाँव के ही चार शासकीय चिकित्सकों की गरिमामयी उपस्थिति में न सिर्फ मातृ शक्ति को उचित परामर्श मिले बल्कि संवाद सत्र में उन्होंने अपने अनुभव भी साझा किये।

पोषण की कमी, मासिक धर्म से जुड़ी अशुद्धता, कम आयु में बच्चियों की मासिक धर्म की अनियमितता से जूझना और गर्भावस्था में लापरवाही जैसी समस्याएं आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के स्वास्थ्य को कमजोर करती हैं।

ऐसी समस्याओं के कारण, निवारण और सावधानियों से जुड़े विषय पर माधव सेवा न्यास सतत कार्यक्रमों का आयोजन करता है और ये सभी विशेषज्ञ -परामर्श की सहभागिता से सम्पन्न होते हैं।

कल भी आयोजन में मातृशक्ति अपने विचार स्वास्थ्य को लेकर रखे।उनके अपने आयुर्वेदिक घरेलु नुस्खों के साथ जीवनचर्या से जुड़ी बातें जैसे --

उनके द्वारा बताए गए सबसे आम कारण थेः पति का सहयोग न मिलना, परिवार का सहयोग न मिलना समय की कमी, सामाजिक निर्धारक तत्व , मातृ स्वास्थ्य, स्वास्थ्य असमानता।ये विषय सामाजिक रूप से गहरे हैं जिन पर काम करने बहुत जरुरत है।

चिकित्सक विशेषज्ञ द्वारा स्वास्थ्य को लेकर सरकारी योजनाओं के विषय में भी विस्तार में जानकारी दी गई क्योंकि सही जानकारी का अभाव भी ग्रामीण क्षेत्र की एक बड़ी समस्या है।

कल ऐसे विषयों पर मातृशक्ति ने खुलकर चर्चा की जिन पर वे अपने परिवार से भी संवाद करने में संकोच करती हैं। इसमें किशोर बालिकाओं की सहभागिता भी उल्लेखनीय रही।

सभी की सामूहिक सहभागिता और स्त्री जागरूकता की दिशा में यह निरंतरता अब अपने सकारात्मक परिणाम देने लगी है मातृशक्ति अब ऐसे बौद्धिक आयोजनों की प्रतीक्षा करती है अपनी ओर से अपने साथ महिलाओं को स्वयं जोड़ती है।

यही किसी संकल्प की सार्थकता है कि हाथ से हाथ जुड़ें..

विश्व हिंदी परिषद के केंद्रीय कार्यालय में डॉ. इंद्रेश कुमार जी का गरिमामय आगमन

नई दिल्ली। विश्व हिंदी परिषद के केंद्रीय कार्यालय में संघ के वरिष्ठ पदाधिकारी एवं परिषद के संरक्षक माननीय डॉ. इंद्रेश कुमार जी का आगमन हुआ। राष्ट्रीय महासचिव श्री विपिन कुमार जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री डी.पी. मिश्र सहित परिषद के पदाधिकारियों ने उनका स्वागत किया।

इस अवसर पर माननीय सांसदगणों के साथ हिंदी के प्रचार-प्रसार, हिंदी की वैश्विक प्रतिष्ठा, राष्ट्र निर्माण एवं भारतीय संस्कृति से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर सार्थक संवाद हुआ। बैठक में लोकसभा सांसद श्री जी. नागेश जी, लोकसभा सांसद श्रीमती कमलेश जांगड़े जी, राज्यसभा सांसद श्रीमती धर्मशीला गुप्ता जी, राज्यसभा सांसद श्री प्रकाश चिक बराइक जी, राज्यसभा सांसद श्रीमती लक्ष्मी वर्मा जी एवं राज्यसभा सांसद श्री सुजीत कुमार जी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

सभी माननीय अतिथियों को 30झ31 अक्टूबर 2026 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन ह्यभारत रत्न अटल : हिंदी, राष्ट्रवाद और सुशासनह्न के लिए सादर आमंत्रित किया गया।

डॉ. इंद्रेश कुमार जी ने सम्मेलन की सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हुए हिंदी, राष्ट्र एवं भारतीय मूल्यों के प्रति समर्पित प्रयासों को और व्यापक बनाने का आह्वान किया।

Picture of the day

संघर्ष

बढ़ें चलों निज ध्येय बिन्दु तक
संघर्षों के पथ पर चलकर
बिखरें हो अगर कंटक पथ में
बढ़ों खार सब पथ के चुनकर।
जीवन लेखा है कर्मों का
सदा कर्मरत ही है रहना
कर्मों से सँवरता जीवन पथ
त्याग मोह आलस्य का करना।
देख झंझावात दुखों की
नहीं धीरता मन की खोना
दुख-सुख अंग है जीवन के
रख सम प्रीति जीवन जीना।
मिलें सफलता जग में उसकों
करता जो कर्मो से प्रेम
समझ मर्म सत्कर्म धर्म का
करता पालन प्रतिपल नेम।
जीवन नाम है संघर्षों का
विरत नहीं कर्तव्य से होना
करता शर संधान वहीं जो
सदा दृष्टि लक्ष्य पर रखता।

मन्शा शुक्ला

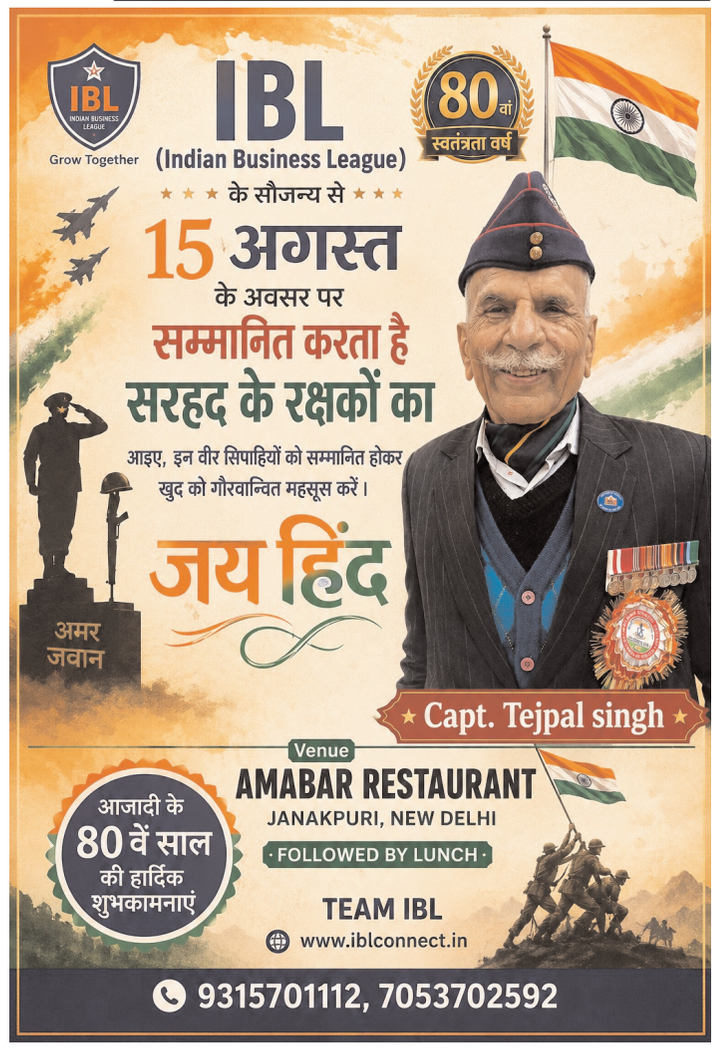

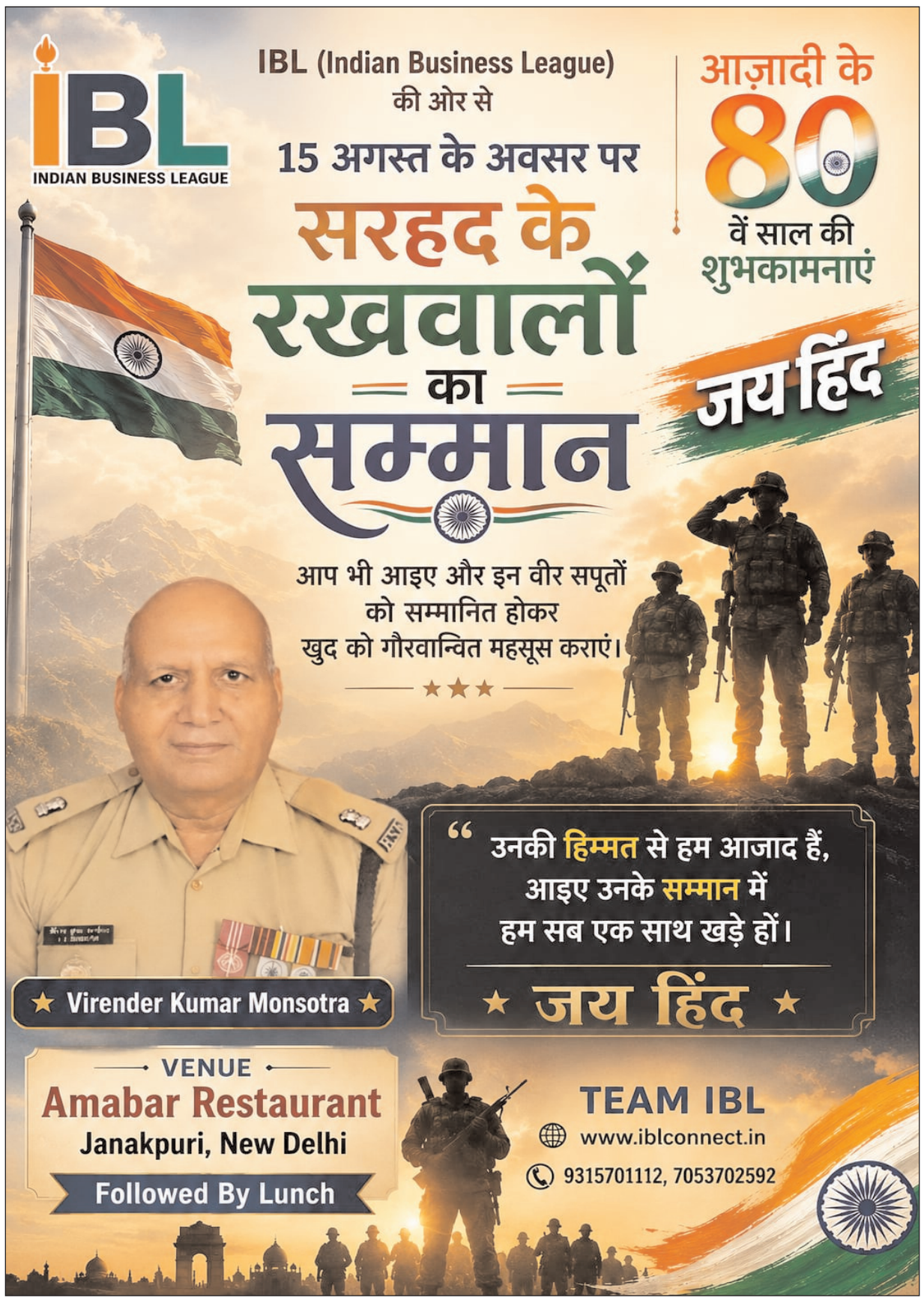

डिजिटल साहित्य २४ पत्रिका-डिजिटल संस्करण-मीडिया पंचायत न्यूज पोर्टल दिल्ली कार्यालय २४ आदर्श गली, पालमगाँव नई दिल्ली, प्रथम तल ११००४५
नोट- उपर्युक्त ई पेपर को अवैध रूप से छपवाना कानूनन अपराध है।

नई दिल्ली में धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज जयंती समारोह का भव्य उद्घाटन

नई दिल्ली स्थित डा. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में छोटे भाई और युवा चेतना के राष्ट्रीय संयोजक श्री रोहित कुमार सिंह जी द्वारा आयोजित धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज जयंती समारोह का उद्घाटन वरिष्ठ संत स्वामी अभिषेक ब्रह्मचारी जी,विश्व हिंदू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी,इंदिरा गांधी कला केंद्र के अध्यक्ष श्री रामबहादुर राय जी,पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री शाहनवाज हुसैन जी,केंद्रीय मंत्री श्री डा. राजभूषण चौधरी निषाद जी,सांसद श्री संजय सेठ जी,पूर्व विधान पार्षद श्री लाल बाबू प्रसाद जी के साथ किया।

नफरत

नफरत की चश्मा उतार कर देखो
सामने दिखेगा तुम्हें सिर्फ इन्सान
मन को सुकून देने वाला है
जब नफरत का करोगे अपमान
नफरत की बीज मन में ना डालना
छीन लेता है ये जीवन का . सुकून
नफरत की पौधा और .इनका फल
पैदा करता है अदावत की जूनून
इतिहास के पन्ने पलट कर देख लो
मिट गई है सूरमाओं की हस्ती
जीवन के सुख में आग लगा देता है
जल गई है धरा पे बस्ती की बस्ती
नफरत की जो खोल बैठा है दुकान
मिट गई है उस सज्जन की जहान
सगे सवंधी सड़क पे आ गये हैं
पड़ गई है उनकी मुसीबत में जान
गुस्से को ठंडे बस्ते में रख मेरे भाई
गुस्सा है अब बारूद की एक ढ़ेर
अपनो में हो या बेगानों की ताईं
गुस्से से नही है सुकुन को कभी खैर

उदय किशोर साह
मो० पो० जयपुर जिला बांका बिहार

प्रणिता साहित्य न्यास की मासिक काव्य गोष्ठी का आयोजन 13 अगस्त 2026 को सायं 6 बजे किया गया

दिनांकः 13 अगस्त 2026
समयः सायं 6:00 बजे

प्रणेता साहित्य न्यास की मासिक काव्य गोष्ठी का आयोजन 13 अगस्त 2026 को सायं 6 बजे किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित, प्रणेता साहित्य न्यास के संस्थापक अध्यक्ष एस. जी. एस. सिसोदिया जी ने की। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि छंद-मर्मज्ञ एवं वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती पुष्पा शर्मा ह्यकुसुमह्ल जी रहीं।

कार्यक्रम का सुचारु संचालन, प्रणेता साहित्य न्यास की सचिव श्रीमती तरुणा पुंडीर ह्यतरुनिलह्ल ने किया।

श्रीमती अलका गर्ग जी की सुमधुर सरस्वती वंदना से गोष्ठी का शुभारंभ हुआ।

गोष्ठी का आयोजन स्वतंत्रता दिवस एवं तीज के पावन अवसर पर किया गया। इस अवसर पर तीज, सावन और राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत कविताओं का सस्वर पाठ किया गया।

सहभागी रचनाकार शकुंतला मित्तल, पुष्पा शर्मा ह्यकुसुमह्ल, तरुणा पुंडीर ह्यतरुनिलह्ल, सरिता गुप्ता, शिखा खुराना कुमुदिनी, काजल गुप्ता, प्रेम लता चौधरी, राधा गोयल, डॉ. शारदा मिश्रा, डॉ. पराग शर्मा राज, परिणीता स्वयंसिद्धा, नीरज त्यागी, सुधा श्रीवास्तव पीयूषी, अलका गर्ग अक्श, प्रो. अंजू अग्रवाल उत्साही, डॉ. रशीद गौरी, डॉ. पूजा गुप्ता, डॉ. वनिता शर्मा, प्रकाश कंवर, राजेश्वरी जोशी रहे।

सभी रचनाकारों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुतियों से गोष्ठी को समृद्ध किया। सावन और तीज की रिमझिम भावनाओं के साथ राष्ट्रप्रेम की ओजस्वी कविताओं ने साहित्यिक वातावरण को भावपूर्ण बना दिया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में एस. जी. एस. सिसोदिया जी ने साहित्यिक आयोजनों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी रचनाकारों का उत्साहवर्धन किया।

मुख्य अतिथि श्रीमती पुष्पा शर्मा कुसुम जी ने भी साहित्य और काव्य-सृजन से संबंधित अपने विचार साझा किए।

कार्यक्रम के अंत में संस्था की महासचिव शकुंतला मित्तल ने सभी अतिथियों, रचनाकारों एवं सहभागियों के प्रति आभार ज्ञापित किया।